# राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 4 ] पंचम विधान सभा के चतुर्थ सत्र का 13 वां दिवस [ संख्या 6

सोमवार

दिनांक 15 अक्टूबर, 1973

विधान सभा की बैठक म. पू. 11-01 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई

(श्री रामकिशोर व्यास, अध्यक्ष, पदासीन)

## शोक-प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष : श्रद्धांजलि !

**श्री हरिदेव जोशी** ( मुख्य मंत्री ) : अध्यक्ष महोदय, हम सब लोग आज एक बहुत ही गहरे शोक के वातावरण में मिल रहे हैं। जैसा कि आपको मालूम है इस सदन के नेता और हमारे मुख्य मंत्री श्री बरकतुल्ला खां साहब का पिछले दिनों देहावसान हो गया। मैंने अभी थोड़ी देर पहले कांग्रेस पार्टी की मीटिंग में कहा था, मैं इसे विधि की विडम्बना कहूं या अपने भाग्य की विडम्बना कहूं कि मुझे आज इस सदन में उनके लिये शोक प्रस्ताव रखने के लिये उपस्थित होना पड़ा।

अध्यक्ष महोदय, वैसे तो बरकत साहब इस सदन के बहुत पुराने सदस्यों में से एक रहे हैं और यहां उन्होंने साधारण सदस्य, उप मंत्री, मंत्री और उसके बाद मुख्य मंत्री के रूप में योगदान दिया है। किन्तु जब से वे मुख्य मंत्री बने, आने वाला इतिहास इस बात का साक्षी रहेगा, अध्यक्ष महोदय, बरकत साहब ने एक नये प्रकार की भूमिका अदा की है। अपनी व्यक्तिगत खूबियों से, अपनी योग्यता से, अपनी प्रशासनिक कुशलता से उन्होंने न केवल कांग्रेस पार्टी को, न केवल इस सदन को, न केवल राजस्थान को बल्कि पूरे देश को प्रभावित किया।

अध्यक्ष महोदय, मनुष्य आता है और चला जाता है। जो जन्म लेता है वह मरता है मगर जो मर करके दूसरे लोगों के मन में बसता है वह मर करके भी अमर हो जाता है। मैं यह कह सकता हूं कि पार्थिव रूप में बरकत साहब हमारे बीच में नहीं हैं किन्तु एक महामानव के रूप में, एक अच्छे प्रशासक के रूप में, गरीबों के उद्धारक के रूप में, प्रगतिशील विचारक के रूप में और शायद सबसे ऊपर एक बहुत अच्छे दोस्त के रूप में बरकत साहब हमेशा हमेशा अमर रहेंगे और उनको कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

जैसा कि हम सबको मालूम है वे एक बड़े कहे जाने वाले घराने में जन्मे किन्तु अपने बड़प्पन के कारण जो उनकी बुराइयां थीं उनमें वे जल कमलवत् रहे। बुराइयां उनको छू भी नहीं गई थीं। वे

(श्री हरिदेव जोशी)

अच्छे विद्वान थे किन्तु उन्होंने अपनी विद्वत्ता का कभी प्रदर्शन नहीं किया। अध्यक्ष महोदय, मैंने उन्हें एक कामन मेन की तरह देखा है, मैंने उन्हें संसद सदस्य के रूप में देखा है, राजस्थान के उप मंत्री के रूप में देखा है, मैंने उन्हें मंत्री के रूप में भी देखा है। एक अजीब सी विडम्बना है, दो सवा दो साल तक मैं उनके साथ, इस साथ लगी कुर्सी पर भी बैठा हूं। अध्यक्ष महोदय, इन विभिन्न रूपों में देखने के बाद में भी उस आदमी का एक निराला, निखरा हुआ रूप था, वह मुख्य मंत्री और मंत्री का कभी नहीं था। वह एक महामानव का रूप था। मैंने बड़ी कुर्सियों के ऊपर बड़े लोगों को बैठकर बुरी तरह गुस्सा होते हुए देखा है। मगर बरकत साहब को परेशानियों के अन्दर भी परेशान नहीं देखा और अधिक से अधिक तंग करने के बावजूद भी उनको गुस्सा करते नहीं देखा। ऐसा कहा जाता है कि अभिजात वर्ग में पैदा होने वाले व्यक्ति अपने दूसरे वर्ग की समस्याओं को समझ नहीं सकते और उनके प्रति सहानुभूति नहीं रख सकते, किन्तु अभिजात वर्ग में पैदा होकर भी बरकत साहब ने निश्चित रूप से समाज के सर्वहारा वर्ग के साथ अपने आप को जोड़ा था। उन्होंने यह कोशिश की और जो भी अवसर उन्हें मिले उनका उपयोग उन्होंने उस डाउनट्रोडन वर्ग को ऊंचा उठाने के लिए किया। वे इसमें कितने सफल हुए, कितने असफल हुए किन्तु उनकी निष्ठा, उनकी भावना आज कहीं भी छिपी हुई नहीं है। उन्होंने, मैं निर्विवाद रूप से कह सकता हूं, इस कांग्रेस पार्टी को एक नया दिशादर्शन दिया। राजस्थान के प्रशासन को उन्होंने एक नया स्वरूप दिया, एक नयी गतिशीलता दी। स्थितियों से, वातावरण के दबाव से ऊपर उठे और इस बात की चिन्ता किये बगैर कि अमुक प्रकार के कदम से कौन उनका सहयोग करेगा और कौन उनका कितना विरोध करेगा निन्दा और भय के बिना उन्होंने कर्त्तव्य के मार्ग की ओर बढ़ने की कोशिश की।

अध्यक्ष महोदय, ऐसा मालूम पड़ता था कि राजस्थान के राजनैतिक गगन में एक नये प्रकार के नक्षत्र का उदय हुआ है और वह नयी रोशनी देंगे, नया आलोक देंगे। हमारी यह आकांक्षायें, हमारी यह कामनायें विधि ने चूर-चूर कर दीं। अध्यक्ष महोदय, 11 तारीख की सबेरे जब मैं आपके पास बैठा हुआ था आपको याद होगा कि कुछ संवाद मिला था। वहां जाकर उन्हें देखा, हमेशा-हमेशा मुस्कराने वाला चेहरा, हमेशा स्वागत में उठने वाली बाहें उस दिन उठ नहीं रही थीं। थोड़ी देर में विधि का विधान पूरा हो गया और इस सदन का नेता चला गया। आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे ऐसा लगता है आपमें से, हम में से और जो बाहर हैं उनमें से भी प्रत्येक ने कुछ न कुछ खोया है। इस विधान सभा का कोई नया नेता चुना जायेगा, प्रशासन को एक नया मुख्य मंत्री मिलेगा किन्तु उस विधवा मां को बेटा वापिस नहीं मिलेगा, उस बहिन को भाई नहीं मिलेगा, उषी खां को अपना पति नहीं मिलेगा और दोस्तों को वापिस अपना दोस्त नहीं मिलेगा। अपने उस बिछुड़े हुए दोस्त की स्मृति में मैं शत श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं–अपनी ओर से,

(श्री हरिदेव जोशी)

कांग्रेस पार्टी की ओर से और आप सब की ओर से।

मैं एक प्रस्ताव पढ़ता हूँ और उपस्थित करता हूँ :–

"यह सदन अपने स्वर्गीय यशस्वी नेता और राज्य के कुशल, कर्मठ, कीर्तिवान मुख्य मन्त्री श्री बरकतुल्ला खां के आकस्मिक तथा असामयिक निधन पर अपने को हतप्रभ और उस आश्चर्यमिश्रित खेद और हार्दिक शोक में सम्मिलित अनुभव करता है जो इस राष्ट्रव्यापी क्षति के कारण राजस्थान के ही नहीं देश के हर भाग में व्याप्त हो गया है।

बड़े कठिन समय में श्री बरकतुल्ला खां ने इस राज्य की बागडोर संभाली थी। पाकिस्तानी आक्रमण, अकाल की भीषणता और बाढ़ की असाधारणता ने प्रशासन को सामान्य गति से नहीं चलने दिया, फिर भी आपने उसे नयी कुशलता, लोकचेतना, शुद्धता और दृढ़ता से अभिषिक्त किया और अपने लिए निष्पक्षता तथा एकनिष्ठा की ऐसी ख्याति अर्जित की कि सारे देश का ध्यान आपकी क्षमता, चेतन्यता, सिद्धान्तवादिता और प्रगतिशीलता के प्रति आकृष्ट हो गया। बरकत साहब ने तीव्र गति से देश के गतिविधि नियंत्रक केन्द्रों में अपना प्रभावशाली स्थान बना लिया था, और आपकी अल्पायु देखते हुए लगने लगा था कि देश में ऊंचा से ऊंचा पद और बड़ा से बड़ा काम आपकी पहुंच से दूर नहीं है। आपके दायित्व आपको संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न देशों में भी ले गये, और वहां आपने भारतीय पक्ष का निरन्तर इतनी योग्यता तथा सफलता से प्रतिपादन किया कि वैदेशिक मामलों में भी आपका स्थान सुरक्षित हो गया।

बरकत साहब ने विशेषाधिकार प्राप्त परिवार में जन्म पाया, परन्तु जीवन के आरम्भ से आपने अपने को उससे ऊपर उठा लिया, और वह समानता ही नहीं, निर्धन, असहाय और पिछड़े वर्ग के प्रति ऐसा अपनत्व अर्जित किया कि सब लोग प्यार से आपको 'प्यारे मियां' कहने लगे। आपने जोधपुर म्यूनिसिपल काउन्सिल तथा जोधपुर से ही लगातार तीन बार विधान सभा के चुनाव ऐसे निर्वाचन क्षेत्रों से जीत कर जिसमें आपकी जाति का बहुमत नहीं था, अपनी देशभक्ति, राष्ट्रवादिता तथा धर्म-निरपेक्षता स्वयं सिद्ध करदी, और म्यूनिसिपल प्रेसीडेन्ट, जोधपुर राज्य में मन्त्री, जोधपुर के दिल्ली स्थित राजकीय प्रतिनिधि, राज्य सभा सदस्य, राजस्थान के उप-मन्त्री, मन्त्री और मुख्य मन्त्री बनने पर अपने व्यवहार के कारण उसके सक्रिय और सजीव उदाहरण के रूप में आपका उल्लेख किया जाने लगा। चौथा, और अपने जीवन का अन्तिम निर्वाचन अपने मूल निर्वाचन क्षेत्र से दूर जीत कर आपने सारे राज्य में अपनी बढ़ती हुई लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा सुस्पष्ट की, और प्रशासनिक विषयों में राज्य के हर भाग के प्रति समान व्यवहार को ऐसा चमचमाता रूप दिया और मानवीय समस्याओं के प्रति ऐसी विलक्षण अन्तर्दृष्टि दिखाई कि यह सुविशाल, समस्याओं से ओतप्रोत, राजस्थान राज्य आप

# Page No 4



(श्री हरिदेव जोशी)

में परिपूर्ण विश्वास करने लगा, और पांचवीं योजना को आपके नेतृत्व में ऐसा प्रारूप मिला कि इस अतीतकालीन गौरव-मंडित प्रदेश का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल दीखने लगा। जिस लगन तथा चेष्टा से आप राज्य का पक्ष अखिल भारतीय मंचों पर प्रस्तुत करते थे, और भारत सरकार से जूझते थे, उससे लगने लगा था कि राजस्थान के अधिकार अब कोई उससे दूर नहीं रख सकेगा, और उसकी आवश्यकताएं संपूर्ति के निकट आएंगी। राज्य के बाहर बसे लोग भी नये विश्वास से राजस्थान के प्रति आकृष्ट होने लगे थे।

उनके व्यक्तिगत गुणों ने श्री बरकतुल्ला खां को महामानव बना दिया था। वे सौम्य, मृदुभाषी, सरल हृदय, मिलनसार, अच्छे मित्र, जीवन से आनन्द लेने वाले और जिससे सम्पर्क हुआ उसी को आनन्द देने वाले थे। साथ ही साथ उन्होंने अपना जीवन जन साधारण के प्रति समर्पित कर रखा था, और इसके लिए आवश्यक दृढ़ता, सिद्धान्तनिष्ठा तथा अपार सक्रियता में कभी कमी नहीं आने दी। एकतंत्र की छत्रछाया में जीवन आरम्भ करके आप लोकतन्त्र के दृढ़ स्तम्भ बन गये। पठन-पाठन की अपनी रुचि को वे हंसी खुशी में छिपाये रहते थे। विचारक और वक्ता के जो गुण उन्हें प्राप्त थे वे अल्हड़पन और सादगी से ढके रहते थे। सत्ता के ऊंचे से ऊंचे पदों पर पहुंचकर भी उसके दुर्गुण और उसकी अहमकता को आपने अपने पास नहीं फटकने दिया। आप व्यक्तिगत लाभ के लिए कुछ कर ही नहीं सकते थे, दूसरों को लाभ पहुंचाने का कोई अवसर नहीं चूकते थे। वैभव में जन्मे और पले होने पर भी, वैभव देने वाले इतने पद प्राप्त होने पर भी, बरकत साहब उसमें कभी लिप्त नहीं हुए, और हर मुंह पर बना रहा अपनत्व भरा आपका नाम "बरकत भाई" आपकी कीर्ति की सदा जय-जयकार करता रहेगा।

देश के स्वतन्त्र होने पर प्राचीनता को नवीनता देने का, देश को जड़ों से पुनर्निर्मित करने का, और रचनात्मक क्षेत्र में संसार के राष्ट्रों से होड़ करने का जो युग आया है वह भी कम त्याग और बलिदान नहीं चाहता उसके लिए भी शहीद हुआ जा सकता है, यह बरकत साहब ने सिद्ध कर दिया, और इस क्षेत्र में आपका अनुसरण ही आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है।

क्या बरकत साहब का परिवार, क्या उनकी मित्र मंडली, क्या हमारा यह राज्य और क्या भारत देश, सभी जगह उनके उठ जाने से कभी न पूरी वाली क्षति हुई है, और उनसे जो आशाएं होने लगी थीं उन्होंने इसे असहनीय बना दिया है। इस अवसर पर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के साथ साथ यह सदन उनकी धर्मपत्नी, माता और बहन के प्रति, परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति, उनके मित्रों और शुभचिन्तकों के प्रति, अपनी गहरी सहानुभूति प्रकट करता है, और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि बरकत साहब को चिर-शांति प्राप्त हो तथा उनके जो निकट थे उन सबको उनके देहावसान से हुई पीड़ा को सहने की शक्ति प्राप्त हो।"

श्री **लक्ष्मणसिंह** (डूंगरपुर) : अध्यक्ष महोदय, जिस दिन मैं इस सदन की कार्य

# Page No 5



(श्री लक्ष्मणसिंह)

वाही से भाग लेने को आया था उस दिन स्वप्न में भी यह अनुमान कोई भी नहीं कर सकता था कि आज यह शोक प्रस्ताव इस सदन के समक्ष आएगा। माननीय श्री बरकतुल्ला खां, राजस्थान के मुख्य मंत्री के आकस्मिक, असामयिक निधन से मेरे दल को और मुझे गहरा दुख हुआ है। इस सदन के समस्त सदस्यों को गहरा आघात पहुंचा है।

अध्यक्ष महोदय, जब आपके द्वारा यह सूचना विरोधी पक्ष के सदस्यों को प्राप्त हुई कि मुख्य मंत्रीजी अस्वस्थ हैं और सदन की कार्यवाही स्थगित की गई है तो हम लोग भागे-भागे उनके निवास स्थान पर पहुंचे। उसके कुछ ही मिनिट बाद हमारे बीच से बरकत साहब उठ गये।

माननीय मुख्य मंत्री ने अपने अल्पकाल में मुख्य मंत्री पद को सम्भालने के अल्प काल के बाद सर्वप्रथम साहस के साथ, हौंसले के साथ बाढ़ का सामना किया, बाढ़ के पहले उन्होंने दुष्काल का सामना किया और इस राज्य के अन्दर भ्रष्टाचार में कमी लाने के लिए उन्होंने भरसक साहसिक और प्रशंसनीय कार्य किये। भ्रष्टाचार को कम करने में उनको एक हद तक सफलता मिली, यह सर्वविदित बात है। राजकीय कर्मचारियों की हड़ताल से उनको गहरा आघात पहुँचा और संभवतः इसी कारण से उनकी तन्दुरुस्ती के अन्दर भी फर्क आया। बरकत साहब का मुख्य मंत्रित्वकाल चिरस्मरणीय रहेगा। वे अल्पसंख्यक, परिगणित जातियों और गरीबों को ऊंचा उठाने के हामी थे और इस सदन की कार्यवाही के अन्दर, विचारधारा के अन्दर एक आधुनिक मोड़ लाये। बरकत साहब विदेशों के अन्दर, पार्लियामेन्टरी डेलीगेशन के अन्दर माननीया प्रधान मंत्री के प्रतिनिधि के रूप में कई देशों में गये। युगान्डा, कीनिया, तंजानिया, लीबिया, ईजिप्ट, चिली आदि और वहां पर उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। वे एक कुशल शासक थे और एक दूरदर्शी लोकप्रिय नेता थे।

मेरा उनसे सम्पर्क 1952 से था जब वे राज्य सभा के सदस्य थे। उनका फ्लेट और मेरा फ्लेट बिल्कुल पड़ौस में था और एक ही सीढ़ी के द्वारा हम अपने अलग अलग फ्लेटों में आया जाया करते थे। मैं तभी से उनको जानता था, उनकी इज्जत करता था और उनके जो अनेक गुण थे, उनकी कद्र करता था।

बरकत साहब राजनीति के क्षेत्र में काफी समय रहे। जोधपुर राज्य में जब अन्तर्कालीन मंत्रिमण्डल स्वर्गीय जयनारायणजी व्यास के प्रधान मंत्रित्व के अन्दर गठित हुआ तभी वे इस अन्तरिम मंत्रिमण्डल के सदस्य रहे। वे व्यासजी को अपना गुरु मानते थे। स्वर्गीय जयनारायणजी व्यास एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनको अगर राजस्थान की राजनीति का सर्वोच्च नेता माना जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

बरकत साहब एक हंसमुख, मिलनसार, जिन्दा दिल और हाइली कल्चर्ड, मंजे मंजाए व्यक्ति थे। उनके निधन से राजस्थान विधान सभा ने अपना सदन का नेता खोया है, कांग्रेस दल ने एक लोकप्रिय, एक दूरदर्शी, एक भाषण पटु नेता और एक बहुमूल्य मित्र

(श्री लक्ष्मणसिंह)

खोया है और देश ने निश्चितरूप से एक होनहार नागरिक खोया है। बरकत साहब की स्मृति, पवित्र स्मृति इस सदन के अन्दर, और राजस्थान के अन्दर चिरस्मरणीय रहेगी।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से स्वर्गीय बरकत साहब की आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करे।

स्वर्गीय मुख्य मंत्री के शोक संतप्त परिवार, खास करके उनकी वृद्धा माता के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए प्रार्थना करता हूं कि उनको इस आघात को सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय, इन्हीं शब्दों के साथ में इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

**श्री गुमानमल लोढ़ा** (जोधपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके कक्ष में तीन तारीख को बरकत साहब के साथ जब वार्ता करने का अवसर आया, एक उदार मुख्य मंत्री होने के नाते उनका पहला प्रश्न था स्वास्थ्य के बारे में। मैंने उनसे निवेदन किया मेरा स्वास्थ्य तो अच्छा है लेकिन आपके चेहरे पर थकान है और श्वास की प्रक्रिया में जिस प्रकार से आपको कष्ट का अनुभव हो रहा है, उससे लगता है कि आप अस्वस्थ हैं। काश ! आज आप न पधारते। अध्यक्ष महोदय, उन्होंने उत्तर दिया, आज सत्र का प्रारम्भ है, फिर भी मैं नहीं आता परन्तु पांच स्वर्गीय आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करनी है। भला इस कार्यक्रम के होते हुए, अस्वस्थता के बावजूद सदन से कैसे अनुपस्थित रहता। अध्यक्ष महोदय, कौन जानता था, कल्पना की उड़ान भरने के बाद, स्वप्न में भी कोई यह विचार नहीं कर सकता था कि श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए अपनी अस्वस्थता के बावजूद मुख्य मंत्री इस सत्र में आए और इसी सत्र के अन्दर इस महान् व्यक्ति को हमें श्रद्धांजलि अर्पित करनी होगी। काल का क्रूर प्रहार, नियति का कठोर प्रहार हमसे बरकत साहब को छीन ले जाएगा। इसकी कल्पना भी भयावह है।

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्र की सेवा करने के मार्ग भिन्न-भिन्न होते हैं। अपने जीवन को समर्पित करने के लिए जो मार्ग उन्होंने चुना, उसमें उन्होंने हमेशा थकने के बाद भी दो कदम आगे ही रखे, कभी कदम पीछे रखने का प्रयास नहीं किया। कई बार अस्वस्थ अवस्था में उनसे मिलने का अवसर आया और मैंने उनसे निवेदन किया कि आपके स्वास्थ्य की अवस्था में मुख्य मंत्री पद का यह भार कितना दूभर है। वे कहा करते थे कि तबीयत नासाज़ है, अस्वस्थ है, लेकिन जब चुनौती आती है, चैलेन्जेज आते हैं उस समय मैं खड़ा हो जाता हूँ, और उन चैलेन्जेज का मुकाबला करता हूं। मेरा स्वास्थ्य इसके बीच में नहीं आता है। लेकिन, अध्यक्ष महोदय, यह सुविदित है कि उनकी अस्वस्थता को देखते हुए मुख्य मंत्री पद फूलों का ताज बनकर नहीं आया, फूलों की सेज बनकर नहीं आया, बल्कि प्रधान मंत्री का चयन प्रदेश के लिए चाहे कितना ही अच्छा रहा हो मुख्य मंत्री श्री बरकत साहब के लिए मौत का पैगाम बनकर आया। राजनीति के दंगल, बाहर के दंगल, आज के युग में जो

(श्री गुमानमल लोढ़ा)

कुटिल राजनीति है उससे उनका हृदय कुंठित रहता था। युग–युग का इतिहास इस बात का साक्षी है, अध्यक्ष महोदय, यद्यपि मैं स्वयं एक राजनैतिक कार्यकर्त्ता हूं इस कारण से राजनेता और राजनीति की भर्त्सना करूं तो यही कहा जायगा कि to cut one's own nose for giving bad omen to the neighbour लेकिन सही स्थिति यह है कि आत्मा कुंठित रहती है। दलीय राजनीति, देश के अन्दर चलने वाला चक्र और कुचक्र एक नेक और ईमानदार इन्सान के लिए उस क्षेत्र में काम करने के लिए स्थान नहीं दे सकता। और बरकत साहब एक नेक, ईमानदार, निष्ठावान और सब कुछ होते हुए गरीबों में गरीब थे, दोस्तों में दोस्त थे।

अध्यक्ष महोदय, क्या आप यह कल्पना भी कर सकते हैं कि आज के युग के अन्दर उप मंत्री, मंत्री, मुख्य मंत्री लगातार 15 साल तक विधान सभा के विधायक, राज्यसभा के सदस्य, इतने वर्चस्व के स्थान पर रहने वाले व्यक्ति के मकान के ऊपर 20 वर्षों तक लाखों रुपयों का कर्जा रहा? क्या यह अपेक्षा की जा सकती है कि उस व्यक्ति की कोठी के अन्दर, जिस समय उनका जनाज़ा निकल रहा था, अध्यक्ष महोदय, मैं कई साथियों के साथ बैठा हुआ था, आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस युग के अन्दर उस कोठी के अन्दर गरीब इन्सान रहते थे, सैकड़ों की तादाद के अन्दर, जिनके रहने के स्थानों पर छप्पर लगे हुए थे बोरियों के और कपड़ों से बन्द किये हुए थे और जिनमें दरवाजे तक नहीं थे। स्लम की तरह छोटे छोटे एपार्टमेंट थे जिनके अन्दर गरीब इन्सान रहते थे जो उनको 1 रुपया, 2 रुपया, आठ आने किराया देते थे और कोई निःशुल्क भी रहते थे, किराया भी नहीं देते थे और वह पचासों सालों से वहां पर रहते आये थे। आज के युग में, अध्यक्ष महोदय, सत्ता में आने के पश्चात् कोई व्यक्ति यह पसन्द नहीं करेगा कि उसके आसपास गरीब इन्सान रहें, कोई गन्दा इन्सान पास में आये कोई गन्दा नाला पास में बहे लेकिन उनके मकान के अन्दर इस प्रकार की स्थिति थी, यह नजरिया इस बात का साक्षी है कि दीन, हीन डाउनट्रोडन, गरीब और गरीब तबके के लिए उनके हृदय में कितना प्यार था। इसलिए प्रदेश में और बाहर के लोगों प्यारे मियां के नाम से वे प्रसिद्ध थे।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में उन्होंने अपने प्रशासन से भ्रष्टाचार समाप्त करने की घोषणा की थी और यह घोषणा की थी कि या तो भ्रष्टाचार को समाप्त करके रहूंगा या स्वयं समाप्त हो जाऊंगा। इतिहासकार जब इतिहास लिखने बैठेगा तो उनकी इस घोषणा के साथ में यह भी कहेगा कि वह एक महामानव थे जिन्होंने अपने जीवन के अन्दर अपने संकल्प को पूरा करने का प्रयत्न किया और उसके लिए अपने आपको समाप्त भी कर दिया। उनका जीवन आलोकित करता रहेगा आने वाली पीढ़ियों का मार्ग। अध्यक्ष महोदय, मुझे आज भी याद है कि उन्होंने सन् 1967 के चुनावों के अन्दर धुआंधार संघर्ष होने के बाद में मुझे एक ओर ले जाकर कहा अब हम आपस मे चुनाव नहीं लड़ेंगे। किन्तु, अध्यक्ष महोदय, मुझे अपने कार्यकर्ताओं और मित्रों के दबाव में आकर यद्यपि

Page No 8



( श्री गुमानमल लोढ़ा )

उन्होंने कहा था कि जोधपुर से चुनाव नहीं लड़ेंगे आपस में तो, वहां से चुनाव लड़ना स्वीकार करना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपनी बात को निभाया। यह इस बात के लिए हमेशा उदाहरण रहेगा कि वे कितने उदार दिल के थे।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के अन्दर उन्होंने प्रशासन स्ट्रीमलाइन करने का प्रयास किया, भ्रष्टाचार को मिटाने का प्रयास किया और लोकायुक्त और राज्य कर्मचारियों को सेवाओं के लिए अधिकरण, यह दोनों, विशेष तौर से जो विधेयक अपने काल में उन्होंने प्रस्तुत किये वह हमेशा के लिए यादगार रहेंगे। मुझे याद है, अध्यक्ष महोदय, हमारे भारतीय जनसंघ के भूतपूर्व अध्यक्ष और लोक सभा में हमारे नेता श्री वाजपेयी ने एक बार कहा था जब कि बरकत साहब की बात चली और हमारे आपस के संघर्ष की बात चली कि वह मेरे साथ रहे हुए हैं और आदमी बहुत नेक और ईमानदार हैं और एक बहुत ही अच्छे दोस्त हैं। एक बात मैं और कहना चाहूंगा कि एक बार एक बहुत बड़े व्यक्ति ने यह बात कही थी कि व्यक्ति का, मानव का मूल्यांकन उनके जीवनकाल में नहीं होता है। जिस समय वह अपनी अन्तिम श्वांस लेता है, चिता पर जलाया जाता है या कब्र में दफनाया जाता है उस समय उसकी चादर को देखना होगा कि वह कितनी धवल है, उसमें कोई दाग तो नहीं है। यदि, अध्यक्ष महोदय, यह बात मैं कहूं कि निर्विवादित रूप से विधान सभा का इतिहास इस बात का साक्षी है कि अन्य किसी प्रकार के आरोप उस व्यक्ति के खिलाफ लगाये गये या नहीं लगाये गये, लेकिन भ्रष्टाचार के आरोप अभी तक स्वर्गीय बरकतुल्ला खां साहब के खिलाफ नहीं लगाये गये और किसी ने भी लगाने तक का प्रयास नहीं किया। कब्र में जब इस महान् आत्मा के पार्थिव शरीर को लिटाया गया तो उनकी चादर धवल थी, सफेद थी बेदाग थी। और इसलिए मैं, अध्यक्ष महोदय निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान की विधान सभा ने अपना नेता खोया है, लेकिन राजस्थान की ढाई करोड़ जनता का अपना एक सच्चा हितैषी, सच्चा मार्गदर्शक, सच्चा राजनेता, जो राजनीति में रहने के पश्चात् भी गन्दगी को नीचे रखकर कमल की तरह रहता था ऐसा नेक और ईमानदार नेता हमारे बीच में से उठ गया।

मैं अपनी ओर से और भारतीय जनसंघ की ओर से उस दिवंगत आत्मा को भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि हमारे ऊपर यह क्रूर प्रहार तो उन्होंने किया, लेकिन उसके साथ में उस दिवंगत श्री बरकतुल्ला खां की आत्मा को शांति प्रदान करने का कार्य भी उस महान ईश्वर का ही है। वह साथ में उनके दुःखी परिवार संतप्त परिवार को ढांढस भी बधाए।

मैंने, अध्यक्ष महोदय, उनकी बिलखती हुई मां को साढ़े ग्यारह बजे और 12 बजे उनके मकान पर देखा। उस बूढ़ी मां के जीवन में अन्धेरा छा गया, रोशनी गुल हो गई, उसके दिल पर अमावस्या छा गई, उसके जीवन का सहारा समाप्त हो गया। आज उस बूढ़ी मां के पुत्र बरकत साहब तो न रहे, लेकिन मैं उन्हें विश्वास दिलाऊं कि

( श्री गुमानमल लोढ़ा )

हम सब उस कमी को दूर तो नहीं कर सकते हैं लेकिन उसका प्रयास जरूर करेंगे। शोक संतप्त परिवार को, जिस पर इस समय महान दुःख का वज्राघात, कुठाराघात हुआ है, उसको सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदान करे।

इन्हीं शब्दों के साथ, माननीय जोशी जी ने जो प्रस्ताव रखा है, उसका मैं समर्थन करता हूं।

**श्री निरंजन नाथ आचार्य (मावली) :** अध्यक्ष महोदय, वेदना और व्यथा की अभिव्यक्ति, न विचार है, न जुबान होती है-एक अनुभूति होती है, और वह मौन होती है। इस मौके पर जब कि सारा राजस्थान संतप्त है, उनके निधन से हम यहां पर राजस्थान की व्यथा ही अभिव्यक्त करने के लिए आए हैं।

एक आश्चर्य की बात है, हवेली में से एक झोंपड़ियों का आदमी पैदा हुआ जिसने गरीबी की लंगोटी लगाकर उनके दर्द को समझा। बरकत साहब का मुझसे भी सान्निध्य 17-18 साल रहा। और मन्त्री उप मन्त्री और मुख्य मंत्री के रूप में उनकी उपस्थिति इस सदन में सदैव ही प्रेरणास्पद रही। उनका अभाव निश्चित ही सदन का सूनापन है। कभी भविष्य में जब कोई वैज्ञानिक आज की दबी हुई आवाज खोद कर निकालेंगे उसे सुनने का प्रयास करेंगे तो इस सदन, जिसमें उनकी उपस्थिति इतने लम्बे अर्से तक रही है, से उनकी आवाज गूंजेगी।

अध्यक्ष महोदय, आपके स्वयं के चेम्बर में वे मंत्री और मुख्य मंत्री के रूप में चिन्तन, उल्लास और विनोद किया करते थे–वह भी उनकी उपस्थिति का एक ऐतिहासिक प्रमाण रहेगा।

मैं उनकी मां की व्यथा के सम्बन्ध में कहना नहीं चाहता, उनकी बहन की व्यथा के सम्बन्ध में कहना नहीं चाहता इसलिए कि यह व्यथा सारे राजस्थान की है। लेकिन बरकत साहब की मृत्यु पर शव के सम्बन्ध में जब बातें चल रही थीं तो उनकी मां ने जो कहा वह एक बड़ी दर्दीली अभिव्यक्ति थी। उन्होंने कहा, आज से मेरी दुआएं निखालिस दुआएं होंगी। अभी तक मेरी दुआएं निखालिस नहीं थी उनमें स्वार्थ था। मैं बरकत के दीर्घ जीवन की कामना किया करती थी। लेकिन बरकत के उठ जाने के बाद अब मेरी दुआओं में कोई कामना नहीं होगी। अध्यक्ष महोदय, इस अभिव्यक्ति से वह बरकत की ही मां नहीं रही हैं सारे राजस्थान की मां बन गई हैं। दूसरे जब सभी लोग व्यथित थे, जब भयकर सन्तप्त थे तब उन्होंने एक वाक्य और कहा था "बरकत को विदा होने दो उसमें व्यवधान नहीं डालो। बरकत आ नहीं सकता है। रोना जिन्दगी के साथ जुड़ा है। हम रोते रहेंगे" लगता है बरकत साहब का व्यक्तित्व और बरकत साहब का वर्चस्व इस मां की धरोहर है, जिस मां में इतनी दृढ़ता रही है, इतनी सरलता रही है। इसलिए जो पद के साथ जुड़ा होता है, जो पद के साथ है होता है, वह पदच्युत होते ही चला जाता है। राजनीति के समाप्त होने पर राजनीतिक प्रभाव का अन्त हो जाता है। लेकिन जिस के साथ

( श्री निरंजननाथ आचार्य )

वर्चस्व हो, वह पदच्युत् हो, पद पर रहे या न रहे, उसका व्यक्तित्व सदा अक्षुण्य रहता है। यही बरकत साहब के जीवन में व्यक्तित्व, वर्चस्व, गरिमा और प्रतिष्ठा थी, जिसने उनको सुरभित किया। मैं समझता हूं कि राजस्थान में यह पहला अवसर है कि जब मुख्य मंत्री पद किसी व्यक्तित्व से सुरभित हुआ हो। यह तो विधि की विडम्बना है कि बरकत साहब हमारे बीच से उठ गये। हमें विश्वास था कि बरकत साहब अपनी मान्यताओं के आधार पर ऊंचे उठेंगे। राजस्थान को प्रगतिशीलता की दिशा देने के सन्दर्भ में आम जनता को विश्वास था कि उनका भविष्य उज्जवल है, भारतीय स्तर पर वह एक दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप उठेंगे। लेकिन लगता है कि उनकी कहीं और आवश्यकता थी। और, ऐसे समय में राजस्थान को मझधार में छोड़ कर वह चले गये। मेरा विश्वास है, उनका यह अल्पकाल, दो साल और चार महीने का अल्पकाल, राजस्थान के इतिहास में एक स्वर्णिम प्रकरण रहेगा।

मैं इस मौके पर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह सन्तप्त परिवार को शांति दे। गीता में एक वाक्य है :—

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दन्ति न द्वेष्टि तस्यप्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

इस प्रकार यह स्थित-प्रज्ञ की कोटि में आते थे। चूंकि वह प्यारे मियां थे, इसलिए सभी का प्यार लूटते थे।

**श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर)** : अध्यक्ष महोदय, सदन के माननीय नेता श्री बरकतुल्ला खां हमारे बीच में नहीं रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, 11 तारीख को जब आपने हम लोगों को अपने कक्ष में बुलाया और उस समय आपने जब यह सूचना दी कि बरकत साहब का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है और सब मंत्रीगण वहां पर गये हुए हैं तभी मेरा माथा ठनक गया था और मैंने आपसे यह इच्छा व्यक्त की थी कि हम वहां जाकर मिलना चाहते हैं। तभी हम सब लोगों ने वहां जाकर कोशिश की कि जिन्दगी की अवस्था में उनसे मिल सकें, परन्तु वह सौभाग्य हमें प्राप्त नहीं हो सका। जाते ही हमें सूचना मिल गई कि ऐसा लगता है कि अब वे नहीं रहे हैं, डाक्टर लोग प्रयास कर रहे हैं, लेकिन कोई रेस्पान्स नहीं है। इस रूप में जो अन्तिम अवस्था में बरकत साहब से हम मिलना चाहते थे, वह इच्छा भी पूरी नहीं हो सकी।

अध्यक्ष महोदय, बरकत साहब की महानता एक मुख्य मंत्री से कहीं अधिक थी। उनका सादा जीवन, उनकी कर्तव्य निष्ठा, उनका उज्जवल चरित्र, उनकी ईमानदारी एक ऐसी अमिट छाप छोड़ गई है जनता के दिल पर, जो किसी भी मुख्य मंत्री की छाप से कितनी ही श्रेष्ठ और कितनी ही ऊंची है।

अध्यक्ष महोदय, जैसा प्रस्तावक महोदय ने कहा, मैं उनसे पूर्णतया सहमत हूं, मैं समर्थन करता हूं उनके प्रस्ताव का कि बरकत साहब ने राजस्थान को एक नई दिशा देने की कोशिश की। इसमें सन्देह नहीं है, एक संकटपूर्ण स्थिति में उनको राजस्थान की बागडोर मुख्य मंत्री के रूप में सम्भलायी गई थी। जिस रूप से अपने

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

सिद्धान्तों के लिए उनमें कर्मठता देखने में आयी, कम ही व्यक्ति इस बात का गर्व अनुभव कर सकते हैं। मुझे याद है, 1969 में जब कि सारे देश में कठिन परीक्षा थी सिद्धान्तों की, बरकत साहब को अपना सब कुछ खतरे में डाल कर भी अपने सिद्धान्त ज्यादा प्यारे लगे। मंत्री पद रहे या न रहे इस बात की उन्हें चिन्ता नहीं रही। वे ही शख्स थे जिन्होंने नेतृत्व दिया राजस्थान को। उनका सिद्धान्त था, अन्तरात्मा की आवाज बड़ी है कहीं क्षणिक लाभों से और इसलिए उन्होंने वह रास्ता चुना।

अध्यक्ष महोदय, उनके दिल में एक टीस थी, हमने जो प्रगतिशील प्रोग्राम अपनाया है, उस प्रोग्राम को पूरा करें। समाजवाद के सम्बन्ध में वे बात किया करते थे, और कई बार बड़े मायूस होकर कहा करते थे क्या हम वास्तव में अपने देश में समाजवाद को लाने में कामयाब हो सकेंगे? वे चिन्तित थे, विचित्र वातावरण, प्रतिकूल स्थिति जो उनके इर्द-गिर्द थी या जो देश में दिखती थीं उनसे। और उसमें कई बार उनको यह निराशा भी होती थी कि हम जो यह प्रयत्न कर रहे हैं उसमें हम सफलता की ओर कहां तक पहुँच पायेंगे, कहां तक नहीं। इस बारे में वे हमसे जब भी इस तरह की चर्चा होती थी जिक्र किया करते थे।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में जो भी जिस प्रकार के कार्यक्रम थे जहां तक उनकी अपनी शक्ति थी, व्यक्तिगत उनके प्रयत्न थे उनसे उन्होंने अपनी तरफ से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उनको आगे बढ़ाने में कसर नहीं छोड़ी। अध्यक्ष महोदय, उनकी जो अवस्था थी, केवल 53 वर्ष की आयु में ही वे हमारे बीच से चले गये, मुझे तो उनकी आयु जानकर ही आश्चर्य हुआ, मेरी भी आयु उनसे एक वर्ष अधिक है, मैं आज समझता हूं कि राजस्थान को, सारे देश को उनकी बहुत आवश्यकता थी। जिस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय जगत में, वैदेशिक नीति को मजबूत बनाने में उनका योगदान हमारे देश को मिला, उससे हमारी प्रधान मन्त्री जी उनकी आवश्यकता महसूस करती थीं। संयुक्त राष्ट्र संघ में जब भी कोई इम्पार्टेन्ट डिस्कशन होता था, तब उनकी आवश्यकता पड़ती थी और जैसी मुझे जानकारी मिली है अभी भी जो हिन्दुस्तान से संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना डेलीगेशन जाने वाला है उसमें भी बरकत साहब का नाम था और उनको वहां जाने के लिए आमन्त्रित किया गया था।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में भूमि सुधारों के सम्बन्ध में, अनाज के सम्बन्ध में अपनी नीतियों को लागू करने के सम्बन्ध में मंहगाई, जो भाव बढ़ते जा रहे हैं, उनके सम्बन्ध में अपने आखिरी दिनों में बड़े चिन्तित थे। पिछली 21 सितम्बर को मेरी काफी देर उनसे बातचीत हुई थी। उस समय भी उनका स्वास्थ्य, अध्यक्ष महोदय, बहुत ही गिरा हुआ था। मैंने उनसे यह प्रार्थना की थी कि आप ज्यादा अपने आप को काम में न लगायें, आराम की जरूरत है आपको। इसके बाद उस समय भी जब राज्य कर्मचारियों का आन्दोलन समाप्त हो कर चुका था, मैं राज्य कर्मचारियों की समस्याओं के बारे में मिला था, वे स्वयं बड़े चिन्तित थे, सभी समस्याओं को लेकर वह

( श्री रामानन्द अग्रवाल )

चाहते थे कि हम परिवार की तरह रहे हैं, हमें परिवार की तरह रहना चाहिये और इस तरह हम समस्याओं को सुलझाना चाहते है। महंगाई की बारे में उनको चिंता थी कि बढ़ते भावों के ऊपर किस तरह काबू पायेंगे। रुग्ण अवस्था में भी हर वक्त उनका दिमाग इन बातों पर लगा रहता था।

पिछली 8 तारीख को जब इस सदन में, यहां पर आये थे, तब भी उनकी स्थिति उनकी हालत अच्छी नहीं थी। मैंने उनसे निवेदन किया था, आप अब यह जो अपने शरीर को कष्ट दे रहे हैं, इस तरह की हालत आपकी नहीं है कि आप इसको बर्दाश्त कर सकें। परन्तु उन्होंने अपने स्वास्थ्य की इतनी परवाह नहीं की जितनी कि अपने कर्तव्यों की परवाह की, अपनी जिम्मेदारियों की परवाह की और इसलिए ही अपने कर्तव्यों को करते हुए आज वे हमारे बीच में से चले गये।

अध्यक्ष महोदय, बरकत साहब, जो एक बड़े घराने में पैदा हुए, के दिल में टीस गरीब लोगों के प्रति थी, मजदूरों के प्रति थी, झोंपड़ी में रहने वाले लोगों के प्रति थी, अल्पसंख्यकों के प्रति थी, जो लोग दबे हुए हैं उनके प्रति थी। इस लिए ही आज राजस्थान के तमाम गरीब लोग विशेष तौर से जैसे उनका सहारा देने वाला उनके बीच मे से उठ गया है, ऐसा मानते हैं।

अध्यक्ष महोदय, बरकत साहब जब हमारे बीच में से चले गये, उनके घर पर यहां पर जाने का अवसर हुआ उनके अंतिम क्षणों में और जोधपुर में जाने का अवसर मिला, वहां उन तीन महिलाओं को देखकर हृदय से बर्दाश्त न होने वाली स्थिति नजर आई, वह निराधार और असहाय के रूप में थीं। विधि की विडम्बना है कि राजस्थान के मुख्य मन्त्री की वृद्धा माता, उनकी धर्म पत्नी और बहिन एक समृद्धि और वैभव के साथ रह सकती थीं, एक व्यक्ति के चले जाने के बाद वे अपने आप को असहाय महसूस कर रही हैं। वह इसलिए बरकत साहब ने हमारे सामने उदाहरण पेश किया है, इस प्रकार की परिस्थितियों में होते हुए भी वह अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ गए, बड़े सम्पन्न परिवार में पैदा होकर भी सादा जीवन उनका रहा, सामान्य नागरिक की तरह गरीबों के साथ रहे और अंत में अपने परिवार के पास कुछ नहीं छोड़ कर गए, सिवाय कर्जे के अपने घर के लिए, अपनी माता, बहन और पत्नी के लिये कुछ नहीं छोड़ गए। यह बहुत बड़ा उदाहरण है, आदर्श है हम सब लोगों के लिए, जो प्रेरणादायक रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, माननीय बरकत साहब का जिस प्रकार से प्राणांत हुआ, उसमें जिस प्रकार की व्यवस्थाएं हुईं, वह भी कुछ दुर्भाग्यपूर्ण हैं, परन्तु मैं उनका उल्लेख इस समय नहीं करना चाहूंगा, कभी दूसरे अवसर पर करूंगा।

अंत में मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से, माननीय बरकत साहब को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके संतप्त परिवार को अपनी संवेदना पेश करता हूं।

**श्री केदार नाथ** (गंगानगर) : अध्यक्ष महोदय, सेशन की शुरुआत में तीन तारीख को मैं और भाई रामानंदजी आपको नमस्कार करने गए तो लौटते समय आपके चैम्बर के गेट के सामने वह मिले। हमने स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, आज मुझे आप परेशान मत करना। मैं समझता हूं, अध्यक्ष महोदय, आइरनी ऑफ फेट बोल रही थी। इतना ही नहीं, जो सदन के माननीय सदस्य हैं, मुझसे ज्यादा संबंध उनका उनसे रहा हो, मगर मैं शुरू से उनको जानता हूं। ऐसा मस्त, जो अमीर घर में पैदा हुआ, खूब खाता था, खूब खेलता था, सोता था, पढ़ता था। खुले मैदान में हम एक दूसरे को खिलाड़ी मानते थे, तब से मैं उन्हें जानता हूं। बहुत से पोलिटीशियन्स देखने को मिले हैं, पर उन्होंने अपने आपको इन्ट्रीग्स और मेन्यूअर्स पर आइव नहीं किया। जिंदगी भर जो भी उन्नति की वह अपनी शराफत, इन्सानियत और योग्यता से की। बहुत कम मिसाल मिलेगी, बहुत कम मुख्यमंत्री मिलेंगे जिनको अधिकांश विरोधी दलों का विश्वास प्राप्त रहा हो। मैं समझता हूं उनकी व्यापक रुचियां थीं और प्रतिभाशाली उनका व्यक्तित्व था, इन्सानियत से भरा हुआ। अगर इन्डिविजुअल तरीके से पर्सनल कन्वर्सेशन में किसी बात को करने का मौका मिला तो ऐसा लगता था कि उनमें इन्सानियत भरी हुई थी। शराफत इतनी भरी हुई थी कि बाद में फोन से इन्कार कर देते थे मगर हार्ट टु हार्ट ऐसा मालूम पड़ता था कि वह इन्सान हैं, और फेस टु फेस वह इन्कार नहीं करते थे।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान की राजनीति को नई दिशा देने वाले राजनीतिज्ञ के रूप में उनका व्यक्तित्व उभर रहा था। मैंने उस समय उनको देखा था जब वह हैल्दी थे, मोटी मोटी रोटी, पौष्टिक भोजन, खूब खाना पीना, मगर चीफ मिनिस्टर बनने के बाद न मालूम उन पर क्या असर पड़ा, मैं नहीं कह सकता सोशल कान्फ्लिक्ट्स काम कर रही थी, मैं नहीं कह सकता क्या उनके दिमाग पर असर पड़ा कि आहिस्ते आहिस्ते उनका स्वास्थ्य गिरता गया और वह संभल नहीं पाए। उनके इंगलिश के एक्सप्रेशन्स हैं, हमने राज्य सभा में उनकी दी हुई स्पीचेज पढ़ीं, ऐसे ओरेटर रहे हैं और वह भी एक्सटेम्पोर बोलने वाले। मैं मानता हूं जब लैंड सीलिंग पर बहस हो रही थी, उन्होंने इन्टरवीन किया और "लैंड टु दी टिलर" की परिभाषा दी। लेर वह उन कन्विक्शन्स को जमा नहीं पाए, ऐसे हालात थे, लेकिन वह राजस्थान को विशुद्ध प्रशासन देना चाहते थे। मैं दो शब्दों में बरकत साहब के लिए कहूं कि वह सबके दोस्त थे, वह प्यारे मियां हमें हमेशा याद रहेंगे।

**श्री झाबरमल सुंडा** (फतेहपुर) : अध्यक्ष महोदय, मेरे भीतर कमजोरी है कि ऐसे अवसरों पर बोलती बन्द हो जाती है, फिर भी दिल को कड़ा करके दो शब्द कहना चाहता हूं। बरकत साहब एक ऐसे ईमानदार राजनेता थे, जैसे राजनेता के लिए गांधीजी ने इच्छा व्यक्त की थी। उन्होंने स्वर्गीय व्यास के सच्चे अनुयायी के रूप की छाप राजस्थान पर छोड़ी। इस समाज को इसके लिए उनका हमेशा ऋणी रहना

(श्री झाबरमल सूंडा)

होगा क्योंकि उन्होंने अपनी आहूति इस समाज को स्वच्छ करने में दे दी। मैं अधिक न बोलकर परमात्मा से यह दुआ मांगूंगा कि उनकी रूह को शांति प्रदान करे क्योंकि हिंदू माइथोलोजी के अनुसार जब आदमी कूच करता है तो उसके लिए व्यवस्था है, जिससे हम देखते हैं कि वह कहां जाता है। उसके अनुसार शरद् पूर्णिमा एक बढ़िया त्यौहार माना जाता है और मृत व्यक्ति स्वर्ग में जाता है। मुस्लिम माइथोलोजी के अनुसार आदमी रोजे के दिनों में मरता है तो जन्नत प्राप्त करता है, उसकी रूह ऐसी जगह निवास करेगी जहां उसे शांति मिलेगी। लोकाचार के हिसाब से शोक प्रस्ताव के द्वारा जो कुछ भी वह थे, हमने उनको माना है। सिर्फ मुझे तकलीफ है तो एक ही है कि उनकी वृद्धा माता का अब कोई सहारा नहीं रहा। सबसे ज्यादा शोक अगर किसी प्राणी को होता है तो उनको होता है। मेरी परमात्मा से दुआ है कि आने वाले समय में उनको शक्ति प्रदान करे, उनकी बहन व पत्नी को भी शक्ति दे ताकि आने वाले समय में वे ज्यादा मजबूती से अपने समय को गुजार सकें। इन शब्दों के साथ जो कार्यकारी मुख्य मंत्री ने प्रस्ताव रखा है, उसका मैं शब्दश: समर्थन करता हूं तथा मेरी तरफ से व मेरे दल की ओर से उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

**श्री अध्यक्ष** : बरकत साहब हमारे बीच में नहीं रहे। यह किसी को भी खयाल नहीं था कि वह इतनी जल्दी हम से अलग होंगे। वैसे तो जो भी आदमी आता है वह जाता है, संसार का क्रम यही है लेकिन कोई वक्त पर जाता है कोई बेवक्त जाता है। जो बेवक्त जाता है उसका दिल पर एक असर होता है। मैं मानता हूं कि बरकत साहब का निधन भी हमारे सामने बेवक्त हुआ है। इस विज्ञान की उन्नति के युग में जब कि औसत आयु बढ़ी है, उनका 53 वर्ष की उम्र में चले जाना, खास तौर से जब उनको पूज्य माताजी जिन्दा हैं, माता के सामने लड़के का इंतकाल हो, इससे अधिक तकलीफ व दु:ख देने वाली बात नहीं हो सकती। लेकिन बरकत साहब के कार्य बड़े रहस्यमय थे। जो ईश्वर के प्यारे होते हैं जिनकी यहां जरूरत होती है उनकी वहां भी जरूरत होती है। हो सकता है शायद इसलिए जल्दी बुलाए गए हों। इस सदन से बरकत साहब का बहुत घनिष्ठ संबंध रहा है, वह आप लोगों से छुपा हुआ नहीं है। करीब साढ़े सोलह साल से 1957 से लेकर आज तक इस सदन में रहे। वह इस सदन में अनेक रूप में रहे। वह इस सदन में एक सदस्य की हैसियत से रहे, एक उप मन्त्री के रूप में रहे, एक मंत्री के रूप में रहे और बाद में एक मुख्य मन्त्री के रूप में रहे, इस सदन के नेता के रूप में रहे। लेकिन जब से इस सदन में नेता के रूप में रहे, जब से वह राजस्थान के मुख्य मंत्री बने तब से वह एक न एक समस्या से जूझते ही रहे। वे किसी न किसी प्रकार की समस्या से जूझते ही रहे। उनके सामने एक न एक प्रकार की समस्या आती ही रही और वह उन समस्याओं से मुकाबला करते ही रहे। वह समस्या चाहे अकाल की हो, चाहे वह समस्या बाढ़ की हो, चाहे वह समस्या स्ट्राइक की हो, चाहे

(श्री अध्यक्ष)

किसी प्रकार का एजीटेशन हो, चाहे वह समस्या हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई की ही हो लेकिन उनका सारा कार्यकाल इन समस्याओं से जूझते ही बीता।

बरकत साहब ने इतने थोड़े से समय में भी प्रशासन को उन्नत करने प्रशासन में स्वच्छता लाने के लिये काफी कार्य किये और उनको इन कामों में कुछ अन्शों में, जैसा कि मैं मानता हूं, सफलता भी मिली। उनका उत्साह सराहनीय था। बरकत साहब अल्लाह के बन्दे थे और वह अल्लाह को प्यारे हो गये। वे अपने साथ खुदा की बरकत लेकर आये थे और जो लोग खुदा की बरकत लेकर आते हैं वे अपना काम करके वापिस चले जाते हैं। बरकत साहब करीब दो ढ़ाई साल मुख्य मंत्री रहे और इतने थोड़े से अर्से में उन्होंने अपनी छाप हम सभी सदस्यों चाहे वह कांग्रेस के हों चाहे विरोधी दल के हों, के दिमाग पर छोड़ दी। उन्होंने सभी के दिमाग पर अपना असर छोड़ा। उन्होंने हम सभी के दिमाग के ऊपर एक कशिश छोड़ दी। आज बरकत साहब नहीं हैं लेकिन उनकी बातों का असर आम आदमी के दिमाग पर उनके चले जाने के बाद भी रहेगा।

बरकत साहब एक खानदानी रईस थे। वह एक बड़े घराने में पैदा हुए थे। हालांकि वह पैदा तो एक अमीर घराने में हुए थे, बहुत ही अमीर थे लेकिन रिहायशी फकीर थे। वह उन लोगों में से थे जो अमीर थे और अमीर भी पैदाईशी थे लेकिन उन्हें चाहे जैसा खाने को मिला हो वह खाते थे और चाहे जैसा पहनने को कपड़ा मिला हो उन्होंने पहना। जब वह मिनिस्टर थे तब उन्हें बैठने को छोटी गाड़ी मिली तो वह उसमें भी आराम से बैठे और उन्हें बड़ी गाड़ी मिली तो उसमें भी वह आराम से बैठे। उनके ऊपर छोटी बड़ी गाड़ी का कोई असर नहीं था। वह अमीर होते हुए भी एक योगी थे, एक फकीर की तरह थे। वे ऐसे व्यक्तियों में से थे जिन पर न तो दौलत का ही कोई असर हो सकता था और न ही उन पर हुकूमत का ही असर हो सकता था। लोगों पर दौलत और हुकूमत का नशा जरूर छा जाता है जब कि वह उनके पास आती है। लेकिन जो दिल से फकीर हों उनके ऊपर दौलत का और हुकूमत का कोई नशा असर नहीं कर सकता। ऐसे लोगों की गिनती हमेशा से फकीरों और योगियों में होती है। वह योगी होते हैं। उनके दिमाग का हमेशा सन्तुलन कायम रहता है। उन पर कोई दीवानगी सवार नहीं हो सकती है। उन पर दौलत और हुकूमत का नशा बिलकुल नहीं चढ़ता है। इसलिए मैं समझता हूं कि बरकत साहब इन सब बातों से परे थे। वे एक सही माने में फकीर थे। वे हमेशा से शानदार जिन्दगी बसर करते रहे और उनकी मौत भी शानदार रही। उनकी मौत शानदार रही। कहने का मतलब यह है कि वह शानदार तरीके से मरे। वह हमेशा से काम करते ही रहे। उनकी जिस दिन मृत्यु हुई उसके पांच मिनट पहले तक वह फाइलों को देख रहे थे। वह काम करते करते जब गुसलखाने में गये उसके कुछ सैकन्ड पहले ही वह कागजों पर दस्तखत करके ही उठे

(श्री अध्यक्ष)

थे। उस वक्त उन्होंने अपने पी. ए. को यह कहा कि जिस मीटिंग में हमें जाना है उसे मुलतवी नहीं करना है। हम मीटिंग मुलतवी नहीं कर रहे हैं। हालांकि उन्होंने कहा कि मेरे जो विभाग हैं उनके सवालात का जवाब दूसरे मन्त्री साहबान को विधान सभा में देने के लिए कहा है फिर भी मीटिंग में मैं जाऊंगा। यह शब्द उन के मरने के चन्द मिनट पहले के हैं। इसका मतलब यह हुआ कि वह अपने कर्तव्य के प्रति कितने सजग थे। मैं समझता हूं और ऐसा मेरा मत है कि वह इन्सान जिया भी तो अपने देश के लिये और मरा भी तो अपने देश के लिये। वह अपने मुल्क के लिये ही मरे हैं। बरकत साहब को दफना दिया है और जब उनको दफनाया जा रहा था उस वक्त मेरे मन में एक ऐसी बात आयी कि यह वह आदमी है जो कि अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान था और मेरे मन में यह विचारधारा दौड़ रही थी कि यह वह जगह है जिस जगह की मिट्टी में खुशबू एवफा है।

बरकत साहब एक सम्मानित सभ्यता के प्रतीक थे। वह हिन्दुस्तानी तहजीब के सिम्बल थे, एक प्रतीक थे। उनकी विचारधारा सभी धर्मों के प्रति समान थीं। सभी जातियों के प्रति प्रेम रखने वाले थे। वे जाति बिरादरी की भावना रखने वाले नहीं थे। वे इन बातों से ऊपर थे। वे इन्सानियत को मानने वाले थे। वे एक राष्ट्रीय विचारधारा के व्यक्ति थे। वे राष्ट्रीय विचारधारा रखने वाले देशभक्त थे। मेरी उनसे जान पहचान कई वर्षों पुरानी थी। मेरा उनसे सम्पर्क काफी पुराना है। लेकिन ज्यादा मेरा उनका मिलन कई बार मुशायरों में हुआ करता था। वह अक्सर मुशायरों में शामिल होते थे। वह एक अच्छे शायर भी थे। वह एक आला इन्सान थे बड़े अच्छे शायर थे। उन पर किसी किस्म के लोगों का असर नहीं होता था। न तो वे यह मानते थे कि यह हिन्दू हैं और न यह मानते थे कि यह मुसलमान हैं, या ब्राह्मण है या ईसाई है। वे इन सभी बातों के ऊपर थे। उनका तो सभी से बराबर प्रेम था, वे सभी लोगों की मदद करना चाहते थे। वे एक मुख्य मन्त्री बाद में थे लेकिन वह एक इन्सान पहले थे। वे बड़े ही शरीफ आदमी थे। वे उन शरीफ लोगों की गिनती में आते है जो लालटेन ले जाकर ढूंढने पर भी हमें नहीं मिलते। हालांकि मुख्य मन्त्री बनने के बाद लोगों के मन में यह आम शिकायत थी कि वह लोगों से मिलते नहीं है और लोग उनके प्रति अपने दिलओ दिमाग में कई प्रकार की भावनायें रख लेते थे लेकिन एक बार अगर कोई इन्सान उनसे मिल लेता तो उनसे मिलने के बाद उसके मन में जो भी भावनायें होती थीं उनके खिलाफ में वह सभी समाप्त हो जातीं। वह उन सभी बातों को भूल जाता। और उसके मन में उनके खिलाफ कोई असर नहीं होता।

बरकत साहब एक बहुत ही बड़े ईमानदार और उदार नीयत वाले व्यक्तियों में से थे। उनकी गणना हमेशा से ही ईमानदार लोगों की श्रेणी में होती रही है। और अगर हम ऊंचे से ऊंचे ईमानदार लोगों की गणना करें तो उनकी गणना उन लोगों में जरूर होगी।

( श्री अध्यक्ष )

मैं से तो बरकत साहब के बारे में कई लोगों ने कई बातें इस सदन में कहीं और कुछ बातें मैंने भी आप लोगों को निवेदन कीं। उनके बारे में और भी कई बातें कही जा सकती हैं जैसे कि बरकत साहब के उसूलों के बारे में काफी बातें कही जा सकती हैं, उनके शासन के बारे में भी कई बातें कही जा सकती हैं। चूंकि कई बातें सदन में माननीय सदस्यों ने कह दीं इसलिये मैं उन सभी बातों को दोहराना उचित नहीं समझता हूं और न ही मेरा उन बातों को दोहराना उचित ही है। मैं तो जो भावनायें यहां व्यक्त की गई हैं, माननीय सदस्यों के द्वारा, मैं कुछ अधिक नहीं कह कर उन भावनाओं में ही अपने आपको सम्मिलित करता हूं। जितना सोचता हूं उनके बारे में उतनी ही उनकी अच्छी बातें सामने आती हैं—

"याद आती हैं तेरी वफायें
तेरे चले जाने के बाद"

मैं उस माहौल में, उस मुकम्मल इन्सान को, उस इन्सान को सो सो सलाम पेश करता हूं, शत शत प्रणाम करता हूं, शत शत दुआएं करता हूं कि उनकी रूह को तहम्मुल मिले, उनकी आत्मा को शान्ति मिले। एक बूढ़ी मां के सामने उसका लड़का चला जाता है उसे कितना रंज होता है, वह जुबान से बयान नहीं हो सकता। मेरे पास जज़बात तो हैं अल्फाज नहीं जो मैं कह सकूं। आज तो हैं लेकिन शब्द नहीं हैं सिवाय दुआ करने के कि उनके संतप्त परिवार को ताकत मिले इस सदमे को उठाने की, इसको बर्दाश्त करने की।

मैं आप सब की ओर से, उन माननीय सदस्यों की ओर से भी जो यहां उपस्थित नहीं हैं, उन सब की ओर से जिनको आप रिप्रेजेन्ट करने आये हैं उन लाखों आदमियों की ओर से भी उनको हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। जहां कहीं भी होगी बरकत साहब की रुह वह आपकी हमारी भावनाओं को जानेगी। और हम उनसे यह दुआ करेंगे और प्रार्थना करेंगे कि भौतिक शरीर में तो आप नहीं हैं लेकिन आपकी इमदाद हमको मिलती रहे, आपकी रहनुमाई मिलती रहे। जो कुछ मुल्क की खिदमत उन्होंने की उससे उनका नाम अमर रहने वाला है।

दो मिनट हम लोग मौन खड़े होंगे और उसके बाद यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित समझा जायगा।

(सदन ने दो मिनिट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की)

सदन की कार्यवाही अनिश्चित् काल के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही मध्याह्न पश्चात् 12.35 बजे अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई।)

# शुद्धि–पत्र

( सोमवार, दिनांक 15 अक्टूबर, 1973 )

| स्कम्भ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| 4 | ऊपर से 8 | माग | मार्ग |
| 8 | „ 21 | पूरीवाली | पूरी होने वाली |
| 10 | „ 21 | अन्तकालीन | अन्तर्कालीन |
| 14 | „ 15 | लोगो प्यारे मियां | लोगों में प्यारे मियां |
| 17 | „ 19 | अश्चर्य | आश्चर्य |
| 24 | „ 3 | ह्राठव | हृदय |
| 28 | नीचे से 8 | एन नएक | एक न एक |
| 31 | „ | सिम्लम | सिम्बल |

———